# चतुर्थ अध्याय

# जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के गौण पात्र

## *चतुर्थ अध्याय*

# ''जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों के गौण पात्र''

माथुर के नाटकों में पात्रों की बहुलता नहीं है। गौण से गौण पात्र भी अपनी भूमिका निभाते हैं। एक-एक पात्र को उनके नाटक में महत्त्वपूर्ण काम निभाने हैं। उस गौण पात्र के जरिए भी एक मौलिक बात कहना है। उनके नाटक में गौण पात्र भी गौण नहीं बता सकते।

### 1. गौण पुरुष पात्र -

माथुर जी के तीनों नाटकों में कुल मिलाकर 17 गौण पुरुष पात्र हैं। कोणार्क नाटक में 5 गौण पुरुष पात्र हैं। राजीव, शैवालिक, महेंद्रवर्मन, भास्कर और गजाधर।

#### *1.1 राजीव -*

'कोणार्क' नाटक का एक गौण पात्र है राजीव। वह मुख्य पाषाण कोर्तक है। वह एक उपकरण पात्र है। विशु के साथ कलश स्थापित कर न सकने की बातचित करता है। राजीव कहता है कि अम्ल के हरेक अनुपात को नापने के बाद भी वह ठहर नहीं पाता। सब कुछ विशु ने ही स्थापित किया है। महामात्य के अत्याचारों के बारे में भी राजीव विशु और सौम्यश्री के साथ बात कर रहा है- ''तात दूर-दूर से आनेवाले शिल्पी महामात्य द्वारा किए गए अत्याचारों के समाचार लाते हैं। उनमें से कितनों के कुटुंबों पर महामात्य के अन्याय का हथौड़ा पड़ चुका है। दिन-प्रति-दिन तरह-तरह की आशंका जनक खबरें आ रही हैं।''[1] उनकी आशंका है सारे दंड़पाशिक महामात्य के अधीन होंगे। राजीव ने ही धर्मपद के बारे में विशु को बताया है- ''एक किशोर शिल्पी। हाल ही में आया है। आयु तो अल्प ही है- शायद 16 वर्ष भी नहीं, किंतु बुद्धि तीक्षण। आपसे मिलना भी चाहता है।''[2] राजीव धर्मपद को विशु से मिलाता है और अपना कहना ठीक स्थापित करता है। चालुक्य आने की खबर भी वह देता है। उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है- मंदिर के ध्वस्त होने की संभावना से संबंध नाटकीय विड़ंबना को उपस्थित करना। वह यह सूचना देता है कि नगर के ज्योतिषी ने गणना की है कि जैसे-जैसे ही मंदिर निर्माण का कार्य पूरा होगा मंदिर के

पत्थरों को पंख लग जाएँगें और अंत में ऐसा ही होता है। पत्थर उड़ने लगते हैं और मंदिर ध्वस्त हो जाता है।

इस तरह राजीव इस पात्र में कोई चरित्र विकसित नहीं हो पाता। वह एक पात्र के रूप में प्रयुक्त है।

*1.2 शैवालिक -*

शैवालिक चालुक्य का दूत है। वह महाराज नरसिंहदेव को राजराज चालुक्य ने दिया हुआ संदेश देता है। शैवालिक महाराज नरसिंहदेव से कहता है- "राज्यसत्ता की भित्ती विश्वास नहीं, बल है।"[3] साथ में यह भी बताता है कि तोषालि और कणिका सामंत भी चालुक्य की बाजू में हैं। वह शक्ति किसके पास है उसका साथ देता है। महाराजा को आत्मसमर्पण करने के लिए कहता है। बोलता है युद्ध में पराजित होकर बंदी होना आत्महत्या के तुल्य होगा वह राजा को चुनौती देकर कहता है। "रक्तदान के लिए प्रस्तुत रहिए। मैं जाता हूँ।"[4] चालुक्य के साथ वह आता है और पत्थरों की चोट से मर जाता है।

*1.3 महेंद्र वर्मन -*

महेंद्रवर्मन नरसिंहदेव का रहस्याधिकारी है। वह हर वक्त महाराज नरसिंहदेव के साथ रहता है। कोणार्क मंदिर तथा अपना राज्य और राजा के प्रति उसके मन में प्यार तथा कर्तव्य की भावना होती है। अंत में महाराज के साथ वह रात के अंधेरे में जगन्नाथपुरी चले जाते हैं। नरसिंहदेव के साथ कोणार्क के सौंदर्य पर बातचीत कर रहे हैं- "सागर ही जिसका प्रतिबिंब है, राजकवि का दर्पण उसकी झलक पा सकेगा, देव ?"[5]

अन्य पात्रों में भास्कर, गजाधर, प्रतिहारीगण तथा सैनिक आदि पात्र नाटक में प्रयुक्त हुए हैं। इन पात्रों का अपना अलग व्यक्तित्व नहीं है। इन पात्रों की कोई चारित्रिक विशेषताएँ भी नहीं हैं। पर इनका होना नाटक के लिए जरूरी है।

शारदीया नाटक में कुलमिलाकर तेरह पात्र हैं। इनमें से चार प्रमुख पात्र हैं, बाकी गौण पात्र हैं। गौण पात्रों में दौलराव सिंधिया, परशुराम भाऊ, बाबा फड़के, जिन्सेवाले, सरनाबाई, रहीमन, गढ़पति, दरबान पत्र लेखक, सैनिक आदि पात्र आते हैं।

### *1.4 दौलतराव सिंधिया -*

दौलतराव सिंधिया ग्वालियर राज्य का नरेश एवं मराठा साम्राज्य के अग्रगण्य नेताओं में एक था। वह महादजी सिंधिया का दत्तक पुत्र था। दौलतराव 15 वर्ष की आयु में ही विशाल राज्य का अधिकारी बना था। सभी मराठा सरदार युद्ध के बारे में आपस में चर्चा कर रहे हैं। नरसिंह द्वारा उन्हें यह पता चलता है कि निजाम की छावनी में मराठा सरदारों की नकल की जानेवाली है। तब सिंधिया महाराज की आज्ञा से युद्ध की व्यूह रचना अपनाई जाती है। साथ में नरसिंह की कला की प्रशंसा की जाती है। सिंधिया महाराज कलाप्रेमी है। वह नरसिंह द्वारा बनाई हुई अनोखी साड़ी के बारे में सुनकर कहता है- "साड़ियों के सौदागर। ऐसी कौनसी साड़ियाँ थीं, जिन्हें हरम तक पहुँचाने का जिम्मा तुमने लिया नरसिंहराव।"[6] यहाँ सिंधिया महाराज कला प्रेमी तथा कर्तव्य के प्रति सजग रहनेवाले दिखाई देते हैं। परशुराम भाऊ से वे कहते हैं- "इस वक्त मुझे दूसरा काम है, लेकिन मैं तो आप लोगों के परामर्श में शामिल हूँ। कह दीजिए मेरी सारी फौज कल आक्रमण करने के लिए प्रस्तुत है। चाहे तो सवेरे तोपों के साथ मैं भी चलूँ मोर्चे पर ?"[7] यहाँ सिंधिया एक आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत हुआ है।

दौलतराव सिंधिया पूना के शरदोत्सव में बायजाबाई को देखते हैं। जो उनके लिए एक अनिघ सुंदरी है। उसे देखकर ही उससे प्यार करने लगता है। वह स्वयं कहता है- "कल.... लेकिन आज की रात ! रातें आती हैं और सूनी गुजर जाती हैं। ....यही तो झंझट है युद्ध के मैदान मैं.... पूना के शरदोत्सववाली वह युवती .... याद की बिजली रात को रोशन तो नहीं कर सकती।"[8] सर्जेराव को यह बात मालूम होती है और अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए सर्जेराव कूटनीति अपनाता है। सर्जेराव सिंधिया के मन में नरसिंह के बारे में जो स्थान है उसकी जगह जहर खोलने का काम करता है। सर्जेराव की कूटनीति सिंधिया महाराज समझ नहीं पाया। वह सर्जेराव का इरादा पूरी तरह से समझ नहीं पाया। वह सर्जेराव के बारे में सोचता है- "खौफनाक आदमी है। ....चमकती शमशीर की तरह भयानक। .....मगर खून की प्यासी शमशीर में भी आकर्षण होता है। ....मुझे देह की प्यास है, उसे खून की....।"[9] सर्जेराव की बातों में आकर सिंधिया नरसिंह को विश्वासघाती समझता है- "मराठा नेताओं की उस बीभत्स नकल में वह शामिल था। आप ठीक

कहते हैं.... घाटगेजी।''[10] सिंधिया महाराज उस बायजाबाई के बदले में सर्जेराव की हर शर्तें मंजूर करते हैं। यहाँ सिंधिया को एक आसक्त प्रेमी के रूप में चित्रित किया है।

दौलतराव सिंधिया युद्ध के मैदान से अपने दो विमाताओं को खत भेजता है। उसमें खर्चे के बारे में भी बताता है। इसी समय सर्जेराव उनके मन में इन माताओं के प्रति नफरत और बायजाबाई के प्रति प्यार उत्पन्न करता है। साथ में अपनी नौकरी के बारे में भी अर्जी पेश करता है। सिंधिया महाराज बोलते हैं- भूतों का नुस्खा तो आप के पास है, सर्जेरावजी, लेकिन इन चुड़ेलौं का कोई इलाज नहीं है क्या ?''[11] विट्ठल के मरने की खबर मिलते ही महाराज विह्वल हो उठते हैं।

सर्जेराव घाटगे सिंधिया को शराब पीने की, अफीम तथा नृत्य देखने की बुरी आदतें लगवाता है। इसके बारे में सिंधिया महाराज बोल रहे हैं- ''मौज और मस्ती के खजाने की कुंजी मुझे आप ही ने पकड़ाई है, घाटगेजी।''[12] सिंधिया महाराज अपना सारा समय नृत्य देखने में और शराब पीने में बिताता है। सर्जेराव इस तरह सिंधिया का विश्वास पात्र बन जाता है। दौलतराव सिंधिया सर्जेराव के पुत्री पर मुग्ध तो था ही लेकिन इस विवाह द्वारा सर्जेराव अपना कुल भी कुछ ऊँचा उठाने की कोशिश कर रहा था। इस प्रकार सिंधिया महाराज का ब्याह बायजाबाई के साथ हो जाता है। लेकिन बदले में सिंधिया सर्जेराव को अपना प्रधान मंत्री बनाते हैं। सिंधिया महाराज पूरी तरह से सर्जेराव के वश में हो गए हैं। जिन्सेवाले की नरसिंहराव को छोड़ देने की विनती को सर्जेराव के कारण ही ठुकराता है। फिर भी वह सर्जेराव पर पूरी तरह से विश्वास नहीं करता। वह जिन्सेवाले को बोलता है- ''सर्जेराव घाटगे को यह नहीं मालूम है कि उसे फांसी नहीं दी गई है।''[13]

दौलतराव सिंधिया प्रजावत्सल, कला प्रेमी, कर्तव्य के प्रति सजग रहनेवाले दिखाई देते हैं। लेकिन जैसे ही सर्जेराव की पुत्री बायजा को देखते हैं तब से उसे पाने की चाहत उनके मन में उत्पन्न हो जाती है। इसी कारण वे सर्जेराव के इशारे पर नाचने लगते हैं। वे सुंदरी और शराब में पूरी तरह डूब जाते हैं। सिंधिया महाराज को यह बुरी आदतें न होती तो सिंधिया यह पात्र इस नाटक में सहनायक के रूप में तथा एक आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत होता।

*1.5 परशुराम भाऊ -*

परशुराम भाऊ खर्दा युद्ध में मराठा दल का सेनापति था। मराठों के शिबिर में अपने प्रमुख सैनिकों के साथ वे चर्चा कर रहे हैं। उसी समय बाबा फड़के को डाँटते हैं। वे अपनी पराजय को सहन नहीं कर सकते। नरसिंह द्वारा निजाम शिबिर में मराठा सरदारों को नकल करने की बात उन्हें मालूम होती है, तब वे उसी रात उन पर हमला करने की बात करते हैं। लेकिन साथ में वे मौके की तलाश के बारे में सोचते हैं। जब फड़के उनसे तुरही बजाने की आज्ञा माँगते हैं तब भाऊ उसे कहते हैं- ''बाबा फड़के ....तुरही बजेगी अवश्य लेकिन अवसर की आड़ चाहिए। अवसर की आड़।''[14] यहाँ भाऊ की दूरदृष्टि दिखाई देती है। सिंधिया महाराज जब उन्हें तोपचियों को हुक्म देने के बारे में कहते हैं तब भाऊ उन्हें बारूद की कीमत युद्ध के मैदान में किस प्रकार सोने जैसी होती है यह समझाता है। ''अलीजाह, युद्ध के मैदान में बारूद की कीमत सोने के बराबर है। श्रीमानों के जन्म दिवस पर उन्हें तुला पर सुवर्ण के मुकाबिले तौला जाता है। तोपों का युद्ध भी एक तुला है; एक तरफ बारूद तो दूसरे पलड़े पर निशाने के लिए दुश्मन। योंही बारूद बिखेरना बुद्धिमानी न होगी।''[15] अकारण वह अपने गोला बारूद तथा सैनिकों की शक्ति नष्ट करना नहीं चाहते।

नरसिंहराव द्वारा जब निजाम पर हमला करने के लिए सुनहरा मौका बताया जाता है तब भाऊ स्वयं तोपों के साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। जिस पुल के ऊपर से रसद की गाड़ियाँ आ जा रही हैं उसी पुल को काटने की वे नरसिंह को आज्ञा देते हैं। इस प्रकार निजाम पर हमला करने की सभी तैयारी भाऊ करते हैं। यहाँ भाऊ की सैन्य संगठन शक्ति तथा युद्ध नीति हमारे सामने आती है। वे अपने भतीजे विट्ठल के साथ मोर्चे पर स्वयं चले जाते हैं। नरसिंह की विनंती सुनकर भाऊ कहता है- ''हमने तुम्हारी बात सुन ली है नरसिंहराव। ऐसी बात की तुरंत ही मंजूरी देना संभव नहीं। लेकिन सेनापति के नाते इतना वायदा करता हूँ कि तुम कल शाम तक अगर इस काम को पूरा कर देने की खबर दे सके तो विजय के बाद संधि के मौके पर परिषद के सामने तुम्हें अपनी बात कहने दी जाएगी।''[16]

परशुराम भाऊ जिन्सेवाले के साथ युद्ध के मैदान से लौटे हैं। उनके माथे पर पट्टी बांधी है। अपना भतीजा युद्ध में मारा गया इस बात का उन्हें दुःख है। लेकिन निजाम के बारे में

उनके मन में क्रोध उत्पन्न हो गया है। वे इस समय नरसिंह के इंतजार में हैं। नरसिंह उन्हें पुल तोड़ने का काम पूरा किया ऐसा जब बताता है तब वे खुश हो जाते हैं। नरसिंहराव के जैसे वह हिंदू-मुसलमान को अपने धर्म-काज करने की पूरी आज़ादी चाहिए ऐसा मानता है। जब नरसिंह उन्हें वायदे के बारे में कहता है तब भाऊ कहते हैं- "हमारा युद्‌ध मुसलमान प्रजा के खिलाफ नहीं है। निजाम और उसके वजीर के दुराग्रह को दूर करने के लिए।"[17] यहाँ भाऊ के मानवतावादी विचार स्पष्ट होते हैं। वे किसी धर्म, पंथ तथा समाज के खिलाफ अपना युद्‌ध नहीं मानते बल्कि इन्सानियत के दुश्मनों के खिलाफ मानते हैं।

इस प्रकार परशुराम भाऊ एक आदर्श मराठा सेनापति के रूप में हमारे सामने आते हैं। युद्‌धनीति तथा रणकौशल के बारे में वे कुशल हैं। सेनापति होकर वे सिर्फ हुक्म नहीं चलाते बल्कि स्वयं लड़ते भी हैं। समयसूचकता और मानवतावादी विचार उनके चरित्र के विशेष पहलू हैं। उनमें सैनिकों को प्रेरित करने की कला है। अपनी बारूद का रक्षण तथा युद्‌ध कौशल की बातें उसमें दिखाई देती हैं।

*1.6 जिन्सेवाले -*

जिन्सेवाले ग्वालियर का कुलीन सरदार है। वह नरसिंहराव का गहरा मित्र भी है। मराठा सरदारों में युद्‌ध के बारे में चर्चा हो रही है। उसमें जिन्सेवाले सभी के सामने अपने भेदिया तथा नरसिंह के बारे में बताता है। नरसिंह को बुलाकर उसे निजाम अली के बारे में बताने को कहता है। निजाम पर हमला करने की तैयारी हो रही है सभी सैनिक अपने-अपने काम में लग जाते हैं। तब जिन्सेवाले नरसिंह को पहुँचाने के लिए नदी-तट तक चले जाते हैं। यहाँ जिन्सेवाले का अपने दोस्त नरसिंह के प्रति मित्रप्रेम दिखाई देता है। जिन्सेवाले महाराज को अपने मित्र के बारे में बताता है- "आलीजाद, नरसिंहराव मामूली भेदिया नहीं है। कलावंत है। निजाम के दरबार में हमारे राजदूत गोविंदराव काले का खास आदमी है।"[18]

जिन्सेवाले ग्वालियर किले के नीचे एक अंधकारपूर्ण तहखाने में अपने मित्र नरसिंह के साथ बातचीत करता हुआ दिखाई देता है। राजद्रोह के अपराध में नरसिंह को फाँसी की सजा का हुक्म दिया था। जिन्सेवाले उसे कहता है कि महाराज ने यह हुक्म रद्‌द करके आजीवन कारागार की सजा दी है। अपने मित्र के प्रति जिन्सेवाले के मन में प्यार है। जिन्सेवाले ने ही

नरसिंह को कारीगार में दिल बहलाव के लिए करघे का प्रबंध करवाता है। जिन्सेवाले ने ही अंत में महारानी बनी बायजाबाई को नरसिंह से मिलाता है। जिन्सेवाले को मालूम है कि सर्जेराव के षड़यंत्र का शिकार नरसिंह को होना पड़ा। फिर भी नरसिंह से जिन्सेवाले पूछते हैं कि क्या तुम्हारी निजाम के साथ मिली भगत थी। सिंधिया महाराज तुम्हें आधा मुसलमान कहते हैं। नरसिंह इस बात पर विह्वल हो उठता है। वह कहता है- ''मैं ने बहादुरी दिखाकर पुल तोड़ा इसका यह पुरस्कार इसका जवाब दीजिए।''[19] तब जिन्सेवाले कहते हैं- ''क्या जवाब दूँ, नरसिंह किस ने सिंधिया महाराज के कान भरे हैं, जो मेरी लाख मिन्नतें करने पर भी वह पिघलते नहीं, समझते नहीं बहुत बहुत विनंती करने पर वह सिर्फ इस बात के लिए राजी हुए कि तुम्हें फांसी न दी जाए। लेकिन... लेकिन नरसिंह इस ग्वालियर के किले के तहखाने में आजीवन कारागार का हुक्म दे दिया है।''[20] यहाँ जिन्सेवाले का मित्रप्रेम उमड़ आता है लेकिन सिंधिया उसकी बात मानते नहीं। फिर भी वह कहते हैं कि मैं सिंधिया के पास फिर जाऊँगा तुम्हारे लिए।

जिन्सेवाले ग्वालियर से जब पूना में सिंधिया महाराज के दरबार में आते हैं तब महाराज के महल में नर्तकी और शराब देखकर वे अचरज में पड़ जाते हैं। वह सिंधिया महाराज को नर्तकी और शराब की नशा छोड़कर ग्वालियर लौट चलने को कहते हैं- ''आलीजाह आप जानते हैं पिछले ढाई वर्षों से हर छः माह पर आपकी सेवा में ग्वालियर से आता रहा हूँ। ग्वालियर में आपकी प्रजा आपके दर्शन के लिए तरस रही है। यहाँ के झंझटों को छोड़कर वहाँ नहीं चलिएगा ?''[21] तब महाराज अपनी शादी की बात उसे कहते हैं। इसी खुशी के मौके पर पुनश्चः जिन्सेवाले महाराज को दोनों मिलकर आने का निमंत्रण देते हैं। साथ में नरसिंह को छोड़ने की बात भी वह कहते हैं। तब सिंधिया महाराज इस बात का फैसला महारानी पर छोड़ देते हैं। इस वक्त जिन्सेवाले दरबार से निराश होकर लौटते हैं।

जिन्सेवाले महारानी के साथ नरसिंह के पास आते हैं। महारानी के आने का समाचार वे नरसिंह को देते हैं। महारानी बायजाबाई है ऐसे भी वे बताते हैं और बाहर चले जाते हैं। जिन्सेवाले को अपने दोस्त की कमजोरी मालूम थी। अंत में वे इस प्रकार नरसिंह की बायजाबाई के साथ भेंट कराके अपनी दोस्ती निभाता है।

इस प्रकार पूरे नाटक में जिन्सेवाले मराठा सेनापति के साथ-साथ एक सच्चा दोस्त भी दिखाई देता है। वह एक वीर योद्धा तथा ग्वालियर का कुलीन सरदार भी है। उसका हर पल अपना मित्र नरसिंह को बचाने की कोशिश में ही चला जाता है। अपने मित्र को वह बेकसूर मानकर उस पर लगाया गया राष्ट्रद्रोह का धब्बा निकालने की वह हर समय चेष्टा करता है। अंत में नरसिंह की भेंट महारानी के साथ इस आशा से कराता है और सोचता है कि कारागार से महारानी द्वारा उसे मुक्ति मिले।

*1.7 बाबा फड़के -*

शारदीया नाटक में बाबा फड़के मराठा दल की रसद सामग्री का प्रधान है। जिसे हम क्वार्ट मास्टर जनरल कहते हैं। मराठों के शिबिर में मराठा सरदारों में बातचीत हो रही है। उस में बाबा फड़के भी शामिल है।

बाबा फड़के एक वीर सैनिक है। वह स्वयं सैनिकों की एक टुकड़ी लेकर दुश्मन पर हमला करता है। परशुराम भाऊ और सिंधिया महाराज उसे सवाल पूछते हैं तब बाबा फड़के कहता है- ''सैनिकों का साहस अपने नायकों को निकट पाकर ही बढ़ता है सिंधिया महाराज।''[22] यहाँ बाबा फड़के एक वीर योद्धा तथा अपनी सैनिक टुकड़ी के प्रधान की तरह अपना कर्तव्य निभाता है। वह नरसिंहराव को पूछते हैं- ''नरसिंहराव, कहाँ है ये नक्काल और भांड़ ? आज रात से पहले ही इनका सफाया हो जाना चाहिए। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।''[23]

जब नरसिंह हमले के बारे में तथा जश्न के बारे में कहता है तब बाबा फड़के उतावले हो उठते हैं। वे राजदूत गोविंदराव काले के बारे में भी भला-बुरा कहते हैं और भाऊ साहब को तुरही बजाने की आज्ञा माँगते हैं- ''क्या मिलेगा इन कोशिशों से ? मृगमरीचिका ! सच कहता हूँ। गोविंद राव किसी सपने की दुनिया में रहते हैं। आँखें बंद करके सोचते हैं- हिंदू और मुसलमान मिल जाए, निजाम और मराठे एक हो जाएँ। आँखें उनकी बंद हैं और खाई खोदते जा रहे हैं.... भाऊसाहब, आप सेनापति हैं....तुरही बजाने की आज्ञा दीजिए।''[24] हमले की रणनीति भाऊ तैयार करते हैं। तब भाऊ उसमें हिस्सा लेते हैं। वे दुश्मनों पर हमला करने के लिए सदा जागरूक रहता है। वह सिंधिया महाराज से कहता है- ''तो हर दिशा से मराठों की फौज उन पर टूट

पड़ेगी... ठीक ! ....हम लोगों के खड़ग और बंदूकों की जंग धोने का दिन आ गया।"[25] वे नरसिंह को बताते हैं कि "गोविंदरावजी से कह दो। गोलाबारी के नक्कारखाने में अब वह मेल-मिलाप की तूती बजाने की कोशिश न करें।"[26] इस तरह बाबा फड़के निजाम पर हमला करने के लिए अपनी रसद सामग्री और सैनिकों के साथ चले जाते हैं।

बाबा फडके यहाँ एक वीर सैनिक के रूप में सामने आता है। जिसके मन में निजाम के खिलाफ नफरत फूट-फूटकर भरी हुई है। मेल-मिलाप उन्हें मंजूर नहीं है। पूरे नाटक में फड़के का अपना अलग अस्तित्व नहीं है।

*1.8 गढ़पति -*

गढ़पति ग्वालियर किले और कारागार का अधिपति है। वह सिंधिया का कर्मचारी भी है। किले में महारानी आने की खबर वह नरसिंह को देता है। नरसिंह की रिहाई की कामना भी वह करता है। गढ़पति नरसिंह के साथ सहानुभूति दिखाता है। वह नरसिंह को कहता है- "इन महीनों में तुम्हारे अंदर जो परिवर्तन आ गया है उसे देखकर मैं दंग हूँ। मैं ने इन तहखानों में कैदियों को पत्थर से सिर टकराते देखा है इसलिए कि उन्हें पल के लिए चाँद, सूरज, आसमान की झलक मिल सकें, एक पल के लिए बाहर की रंगीनियों पर दृष्टि डाल सकें। लेकिन तुम हो कि जंजीरें खोल देने पर भी तुम्हारे पैर बंधे ही रहते हैं।"[27] नरसिंह की रिहाई की कामना भी वह करता है। महारानी को प्रसन्न करने के लिए पंचतोलिया साड़ी नरसिंह को महारानी के लिए उपहार में देने की बात कहता है। "....हाँ-हाँ वही रेशम का कपड़ा, जो तुमने इतने महीनों में बुना है वही जो मुझे दिखानेवाले थे। बस वही नई महारानी की भेंट दे देना। खूश हो गई तो तुम्हारे भाग्य ही खुल जाएँगे। शायद आलीजाह से कहकर रिहाई करा दें। समझे।"[28]

गढ़पति के मन में नरसिंहराव के प्रति ममता की भावना है। "नरसिंहराव, तुम जितने अच्छे कारीगर हो उतने ही मूर्ख भी। ...महारानी क्या मेरे कहने से रूक जाएगी ? वह सुने। वे लोग आ पहुँचे। ....देखो; मैं तुमसे यह कहने आया था कि मौका मिले तो महारानी को भेंट दे देना।"[29]

*1.9 सैनिक -*

सैनिक सर्जेराव के अनुचर है। सर्जेराव के कहने पर वे नरसिंह को पकड़कर ग्वालियर किले के तहखाने में पहुँचाते हैं।

*1.10 दरबान -*

सिंधिया का कर्मचारी है दरबान।

*1.11 पत्र लेखक -*

पत्र लेखक भी सिंधिया महाराज का कर्मचारी है। सिंधिया महाराज जो बातें पत्र में लिखने के लिए कहते हैं वही लिखता है। सिंधिया महाराज अपनी विमाताओं को पत्रलेखक द्‌वारा पत्र लिखवाता है।

*1.12 शुक्राचार्य, आत्रि और गर्ग -*

ये तीनों मुनिगण 'पहला राजा' नाटक में प्रधान भूमिका निभाते हैं। नाटककार ने शुक्राचार्य, अत्रि और गर्ग को एक सामूहिक भूमिका और चरित्र दिया है। फिर उन तीनों को अलग-अलग निजी वैशिष्टय भी दिया है। कुछ समीक्षकों का विचार है कि ''आज की समस्याओं का आभास देने के लिए शुक्राचार्य, अत्रि, गर्ग जैसे महान ऋषियों को बिना किसी प्राचीन आधार के षड़यंत्रकारी, वग्वीर राजनीतिज्ञों, कुचक्री मंत्रियों, धनलोलुप स्वार्थी पूंजीपतियों तथा भ्रष्टाचारी ठेकेदारों की सम्मिलित भूमिका निभानेवालों के रूप में प्रस्तुत करना नितांत आपत्तिजनक एवं कुरुचिपूर्ण कार्य है।''[30] श्रीमत भागवत में अत्रि मुनि को प्रेरक और उद्‌बोधक के रूप में चित्रित किया है। नाटककार ने उन्हें आधुनिक वाग्वीर बना दिया है। अंग का चरित्र कुछ समझौतावादी से मिलता जुलता है। लेकिन शुक्राचार्य कूटनीतिज्ञ और अधिक दूरदर्शी है।

नाटककार ने अत्रि, अंग आदि अन्य मुनियों की अपेक्षा शुक्राचार्य को अधिक कूटनीतिज्ञ बना दिया है। इसके साथ-साथ स्वार्थी, दूरदर्शी, सचेत और चतुर दिखाया है। शुक्राचार्य ने ही कवष की माँ अनार्य निबाद नारी को चुप-चाप रातों रात अंग के पास भेज दिया था। जिससे की वेन के निषाद संतान ब्रह्मावर्त से दूर रहे। शुक्राचार्य बोल रहा है- ''मैं ने तो उसे वहाँ रातों रात भेजा था ताकि वेन की निषाद संतान ब्रह्मावर्त से दूर रहे।''[31] वह आर्यकुल में रक्त के मिलाव होने नहीं चाहता। शुक्राचार्य ने ही वेन के शव मंथन का नाटक रचा था। उसके बाद

पृथु को भुजापुत्र बनाकर उसे राजा घोषित करते हैं और राजा को निरंकुशता से दूर रखने के लिए पहले से ही विधान से बाँधकर वचन बद्ध करा लेते हैं। शुक्राचार्य कहते हैं- "हम जिसे राजा घोषित करेंगे वह हमारा अनुरंजक और धर्म का रक्षक होगा, इसलिए नहीं कि उसमें ईश्वर की शक्ति या देवताओं के तेज का स्वरूप है; बल्कि इसलिए कि उसके अधिकारों की बुनियाद होगा हमारा दिया हुआ विधान हमारी बाँधी गई शर्तें।"[32] शुक्राचार्य ने ही पृथु को राजा घोषित करते हैं लेकिन उसके पहले पाँच वचन दिलाया जाता है। हर एक वचन पर कुशा की रस्सी में गाँठ लगवाता है। वह कुशा की रस्सी को पृथु के हाथ से लेकर बोलते हैं- "आयुष्मान लाइये अपना हाथ। ....यह कुशा की विधान है, इसकी गाँठें ही राजधर्म है, जनपद का लोक प्रजा है और उस प्रजा के अनुरंजक आप हमारे राजा हैं।"[33]

पृथु को राजा घोषित करने के बाद शुक्राचार्य ने आजगव धनुष पृथु को भेंट देता है। और कहता है- "राजन, हमारे आशीर्वाद का प्रतीक है यह भेंट। स्वीकार कीजिए। इस धनुष का नाम है आजगव। ....एक दिन इंद्र ने इसी धनुष से सरस्वती, सिंधु और रावी नदियों के तट पर दस्युओं के नगरों का ध्वंस किया था। आज आप के हाथों उसी दिशा से आए डाकुओं का संहार होना है।"[34]

शुक्राचार्य, राजा के पुराहित मंत्रि, गर्ग ज्योतिष मंत्री तथा अत्रि मुनि अमात्य बनते हैं। परंतु अपनी चातुरी और शक्ति से शुक्राचार्य प्रधान मंत्री की शक्ति हासिल कर लेते हैं। दूसरे अंक में अत्रि का यह कथन जहाँ आप (शुक्राचार्य) हैं वही मंत्रि मंडल है। इसी का प्रमाण है पृथु के बिना हत्यारों से उत्तेजित जनता के बीच घुस जाने पर वही अनुमान लगाते हैं कि पृथु की शक्ति वेन से बढ़कर हो जाएगी और वही उसे एक ही झटके में भूचंड़िका की ओर मोड़कर प्रजा के असीम स्नेह और लोकप्रियता से तोड़कर अलग कर देते हैं। अत्रि मुनि को यह स्वीकार करना पड़ता है- "धन्य है शुक्राचार्य, तुम्हारी कूटनीति.... प्रजा अब हम लोगों की मुट्ठी में होगी। भृगुवंशी मानता हूँ तुम्हारा लोहा।"[35]

नाटक के तीसरे अंक में इन मुनियों को स्वार्थी पूँजिपतियों, पार्टीबाजों और भ्रष्टाचारी ठेकेदारों के रूप में चित्रित किया गया है। इनकी आवश्यकता के संबंध में एक नाट्य समीक्षक का यह विचार उचित है कि "शुक्राचार्य, अत्रि, गर्ग, सूत-मागध सभी मंच की

चित्रात्मकता भी बढ़ाएँगे और गुटबाजी, विज्ञापन बाजी, नारेबाजी, सौदेबाजी की ओर भी ध्यान आकृष्ट करेंगे।"[36]

वेन का वध करके मुनिगण नया शासक बनाने के लिए चाहता है। अत्रि के शब्दों में "नया शासक ! नया भूपति ! सुना आपने गर्ग ? ....और मेरे उन भाषणों की याद क्या होगी जो मैं ने वेन के संहार के समय दिए थे कि शासक का पद बेकार है, मनुष्य सब बराबर है, कि धर्म ही शास्ता है और हम ऋषि-मुनि ही धर्मपद के प्रदर्शक हैं ? क्या होंगे वे ओजस्वी शब्द ?"[37]

मुनिगण आर्यकुल में रक्त के मिलाव होने नहीं चाहता। वेन की निषाद संतान को दूर रखना चाहता है। अत्रि बोल रहा है- "जैसे घी की आहुति पाते ही यज्ञ की ज्वाला भड़क उठती है। मैं पूछता-हवन संस्कारों में जाति के प्राण हैं- देवताओं की कृपा हमारा अमृत है। आर्य जाति के रक्त की शुद्धता ही हमारी मर्यादा है जो उस प्राण का घातक है। उस अमृत का शोषक है, उस मर्यादा का ध्वंसक है, क्या ऐसा निर्लज्ज पापी जिंदा रहेगा ? ....कभी नहीं। कभी नहीं ! कभी नहीं ! सारा आसमान गूँज उठता।"[38] वह राजा को अपने वश में रखना चाहता है। अत्रि मुनि आह्वान के स्वर में पृथु को पूछ रहा है- ब्रह्मावर्त पर आज डाकू और लुटेरे छा रहे हैं सरस्वती नदी के उस पार दस्युओं के जिन नगरों को आर्य योद्धाओं ने कभी का मटियामेट कर दिया था, वही से दस्यु लोप सिर उठाने लगे हैं; हमारे यज्ञ और अग्निहोत्र भ्रष्ट किए जा रहे हैं; वेदमंत्रों की ध्वनियाँ जिन कंठों से निकलती थीं उन्हें दबोचा जा रहा है। ....क्या आप का हिमालय भी अछूता रह सकेगा ?"[39]

*1.13 सूत और मागध -*

सूत और मागध पृथु के सफल चाटुकार एवं स्तुतिपाठक है। प्रारंभ में ये दोनों मुनियों के गुप्तचर के रूप में सामने आते हैं। उसी प्रकार पृथु के आगमन का भी समाचार वे ले जाते हैं। जब पृथु राजा बनता है तब वे उसकी स्तुति करते हैं। सूत कहते हैं- "आप दुष्टों के लिए दंड़पाणी होंगे, आप धर्ममर्यादा के विरोधियों का नाश करेंगे। आप अकेले ही प्रज्ञा का पालनपोषण और अनुरंजन कर सकेंगे और इसलिए हे शत्रुनाशक हे दृढ़प्रतिज्ञ हे लोकपालक राजन हम आपका अभिनंदन करते हैं। जिस तरह सबेरे की आहट सुनकर अंधेरे का महासागर सिमटकर

लोप हो जाते हैं ऐसे ही आपकी बुद्धि के स्पर्श से सारे दुःख दैन्य अत्याचार और अनाचार की दुर्दम कालिमा गायब हो जाएगी।''[40] मागध बोल रहे हैं- ''जिस प्रकार सूर्य देवता आठ महीने तपते रहकर जल खींचते हैं और वर्षा ऋतु में उसे उंड़ेल देते हैं; उसी प्रकार आप प्रजा से कर के रूप में धन संजय कर उसे प्रजा के हित में ही व्यय करेंगे। इसीलिए हे नीतिपालक राजन हम उसे प्रजा के हित में ही व्यय करेंगे।'' ''जैसे अंधकार के कैदी वृक्षों में पक्षियों की जंजीरों पर सूरज की चोट पड़ते ही वे खनखना उठती है वैसे ही मुनियों और ब्राह्मणों के यज्ञों के दबे हुए स्वर आपके सर्वव्यापी आश्रम में आकाश को गुंजायमान कर देंगे।''[41] पृथु पहले उनकी स्तुति सुनता है मगर बाद में टोकता है। उसके बाद राजा पृथु उन्हें पूरबी सीमा पर अनूप देश के प्रदेश में अधिपति नियुक्त करता है। तब वे बहुत खुश हो जाते हैं।

दोनों पृथु की स्तुति करने के लिए उनके आगे हाजिर हो जाते हैं। किंतु पहले राजा की अनुमति लेते हैं। तब पृथु उन्हें देवी तथा इंद्रादि देवताओं की स्तुति करने के लिए कहता है। महारानी अर्चना के कहने पर वह राजा की पराक्रम की कथा सुनाने के लिए चारों ओर चले जाते हैं। अंत में पृथु के सामने हाजिर होते हैं और बाँध टूट जाने की खबर भी देते हैं। सूत और मागध के व्यक्तित्व से यह पता चलता है कि वह अपने कार्य में तत्पर है और स्वार्थी है। लेकिन मुनियों की तरह उनका स्वार्थ नहीं है।

पहला राजा नाटक के अन्य गौण पात्र हैं पहला मुखिया, दूसरा मुखिया, तीसरा मुखिया और अन्य ग्रामीण।

*1.14 सूत्रधार और नटी -*

'कोणार्क' में अंकों के प्रारंभ में ही वाचक, वाचिका और सूत्रधार के संवाद आए हैं जब कि 'पहला राजा' में अंक के भीतर नट-नटी और सूत्रधार के दर्शन होते हैं। यह भारतीय और पाश्चात्य नाट्य-पद्धति का मिलाजुला प्रयोग है। 'पहला राजा' के सूत्रधार-नटी संबंधी संवादों को यूनानी कोरस, असमिया अंकियानाट के सूत्रधार और संगी तथा पुराण-महाभारत के वैशम्पायन, सूत, शौनक सभी का थोड़ा बहुत पुट देकर आयोजित किया गया है। सूचना देने, कथानक की कड़ियों को जोड़ने तथा मिथक को आधुनिक संदर्भ में व्याख्यायित करने के लिए लेखक ने उसका सहारा लिया है। मिथक की तर्क संगत व्याख्या इसके बिना संभव नहीं थी।

उदाहरण के लिए वेन की देह का मंथन और उसके भुजा-पुत्र के प्रसंग में मुनियों की भूमिका उनका भूलावा, दूसरे के माध्यम से अपना स्वार्थ-साधन, धर्म और शासन तंत्र की आवश्यकता, पृथु की उदासी और ऊब जैसी कथ्य की अर्थ विस्तार से उभारने के लिए सूत्रधार और नटी अनेक बार मंच पर आते हैं। पूरे नाटक में वे लगभग ग्यारह बार आते हैं और 90 पृष्ठ के नाटक में लगभग 22 पृष्ठ उन्हीं पर खर्च किए गए हैं। पहले अंक में वे पाँच बार मंच पर आते हैं। इनके द्वारा पात्रों के अंतरस्तल की झाँकी देते हैं और उनकी प्रासंगिकता अंतर्वाहिनी है तथा उनकी दार्शनिक या सनकियों जैसी बातें जिज्ञासा उभारती हैं। नाटक में सूत्रधार और नटी व्याख्याता की ऐसी भूमिका निभाते हैं कि यदि उनके संवादों को हटा दिया जाए तो नाटक का सारा ढाँचा चरमरा जाएगा।

## 2. गौण नारी पात्र -

माथुर के नाटकों में स्त्री पात्रों की कमी है। 'कोणार्क' में कोई स्त्री पात्र नहीं, शारदीया में बायजाबाई रहीमन और सरनाबाई तीन स्त्री पात्र आए हैं और 'पहला राजा' नाटक में उर्वी, अर्चना, दासी और सुनीथा आती हैं।

### *2.1 रहीमन -*

'शारदीया' नाटक के एक स्त्री पात्र है रहीमन। वह गायिका और नर्तकी है। सर्जेराव घाटगे ने उसे अपनी पुत्री की संगीत शिक्षा एवं सिंधिया के मनोरंजन के लिए नियुक्त किया है। बायजा की मन बहलाव करने का काम भी उसके पास है। रहीमन बायजा को बोलती है- "यह मुखड़ा तो महल ही के काबिल है और महल ही की शोभा बढ़ाएगा।"[42]

जब बायजाबाई और सरनाबाई भागने का प्रयास कर रही थी, तब रहीमन यह खबर सर्जेराव को देती है और उनकी योजना नष्ट करती है। बायजा का इरादा समझकर रहीमन सर्जेराव को पहले ही सावधान रहने के लिए कहती है- "हर मौके पर एक ही ढंग के हथियार कारगर नहीं होते।"[43] सर्जेराव घाटगे ने उसे नियुक्त करने के कारण वह हर समय उसी के पक्ष में रहते हैं। रहीमन महाराजा सिंधिया के सामने नाचकर उन्हें खुश कराती है।

प्रस्तुत पात्र को नाटककार ने अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए प्रस्तुत किया है।

*2.2 सरनाबाई -*

सरनाबाई बायजाबाई की परिचारिका है। वह हर समय बायजाबाई के साथ रही है। जब बायजा अपने रक्त का टीका लगाकर नरसिंह को विदा करती है तब सरनाबाई तुरंत उस घाव पर पट्टी बाँधती है। बायजाबाई का नरसिंह के साथ प्यार उसे मंजूर है। नरसिंह के विरह में दुःखी रहनेवाली बायजा को सरनाबाई बचपना छोड़ने के लिए कहती है और बोलती है- "बचपन कई तरह के होते हैं बाई। एक तो वह जिसमें हर दिन नया होता है- हर घड़ी ताजी ! यही होता है माँ की गोदी का बचपना।"[44] लेकिन सर्जेराव के सामने वह मजबूर है। सर्जेराव की कूटनीति उसे मालूम होती है। तब बायजाबाई से वह कहती है- "तुम्हारे बापू ने कोई और डगर पकड़ ली है और न पीछे निगाह डालते हैं न नीचे। प्यार के फूलों में ठोकर लगेगी ही।"[45] इस प्रकार सर्जेराव के प्रति अपनी नफरत वह प्रकट करती है।

सरनाबाई बायजा को चेतावनी देती है कि "रहीमन नाच गाने में तो कुशल है ही, मन बहलाव के अनेक साधन भी जानती है।"[46] सरनाबाई से बायजा का विरह की आग में जलना देखा नहीं जाता वह उससे विदा लेना चाहती है। लेकिन बायजाबाई उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती। अपने जाने का कारण वह बताती है- "मैंने बहुत दिन निबाहा। जब तक जीवित रहूँगी अपनी बाईसाहब की स्मृति का संबंध धारे रहूँगी, पर इस घर की दीवारें मानो मुझ पर संदेह की दृष्टि डाल रही हैं। फटकार और मारपीट सह लूँ, पर यह सह लूँ, पर यह संदेह यह शक मेरा मन थक गया है, बाई साहब।"[47]

बायजाबाई बार-बार गोकुल की गोपियों का सवाल पूछती हैं और कहती हैं कि उन गोपियों की तरह तिल-तिलकर विरह की आग में जलनेवाली नहीं हूँ। वह अपनी इच्छा भागकर पूरी करना चाहती है। तब सरनाबाई उसका साथ देती है। लेकिन कहती है यह पागलपन है- "तुम्हारी हिम्मत के आगे मेरी समझदारी के पैर नहीं टिक पाते। जानती हूँ यह पागलपन है, बचपना है।"[48] सरनाबाई हमेशा बायजा की खुशी चाहती है- "तुम्हारी यह खुशी बाईसाहब जैसे हप्तों तक बादल घिरे रहने के बाद सूरज की छटा विकसी हो।"[49] सरनाबाई और बायजा मिलकर भागने के लिए तैयार होते हैं लेकिन यह खबर रहीमन सर्जेराव को देती है और उनकी योजना सफल नहीं होती।

*2.3 सुनीथा -*

'पहला राजा' नाटक में सुनीथा राजमाता है। ब्रह्मावर्त के चौथे शासक अंग की पत्नी थी सुनीथा। नाटक में सुनीथा की भूमिका बहुत कम है। सबसे कम। फिर भी नाटक की एक शक्तिशाली पात्र है सुनीथा। सुनीथा अत्यंत संकल्पवान, दृढ़ स्वाभिमानीनी व्यथित और प्रतिशोध की आग में जलती हुई नारी के रूप में चित्रित की है। वह अत्यंत करुण, कोमल, ममतत्वपूर्ण माँ के रूप में चित्रित होनेवाली है। अट्ठाईस दिन और रात से वह अपने पुत्र वेन के शव की रक्षा कर रही है। वह मृत्युलोक के देवताओं से वेन के प्राण लौट देने की प्रार्थना प्रतिदिन कर रही है। ''ओ मृत्युलोक के देवताओ। लाओ मेरे प्रतापी पुत्र वेन के प्राण वापस करो ! मैंने उसकी देह पर यह चमत्कारपूर्ण लेपन कर, उसे वापस आनेवाले प्राण के योग्य बना रखा है.... आओ, लौट आओ वेन की आत्मा। लौट आओ मेरे बेटे।''[50] लेकिन वह सफल नहीं होती फिर भी वह पराजित नहीं होती। उसमें शक्ति और साहस बहुत ज्यादा है। वह ऋषि मुनियों से भी नहीं डरती है। अपने प्रतापी पुत्र को मारनेवाले मुनियों से वह प्रतिशोध करना चाहती है। अपने पुत्र की गरदन में बाँधी हुईस्सी निकाल देती है। दासी से वह कहती है कि कुशा की अभिशप्त रस्सी को धरती में रो दो। सुनीथा दासी को बोलती है- ''हत्यारे मंत्र। ....नहीं। हत्यारे तो मुनियों के वे हाथ थे जिन्होंने अंधेरी रात में सोते हुए नरसिंह की गर्दन को इस रस्सी से दबाकर उसका वध किया। (रूककर).... लो, दासी। .... पहाड़ी की तलहटी में जाकर गढ़ा खोदकर इसे रोप दो।''[51] ऐसा करने से ब्रह्मावर्त की धरती पर अभिशापों का जंगल फैले और कुचक्री मुनि अपने किए का फल भुगतें। सुनीता स्वाभिमानीनी इतनी है कि अत्रि आदि मुनियों द्वारा सहानुभूति प्रकट किए जाने पर स्पष्ट कह देती है- ''मैं आप के तरस की भिखारिणी नहीं हूँ, आत्मविश्वासी इतनी कि ऋषियों से बेझिझक कह सके- मैं जानती थी कि आप लोगों को लौटना होगा। मैं जानती थी....।''[52] शुक्राचार्य आदि उससे समझौता करने आते हैं तो वह उनकी निंदा और भर्त्सना करती है। परंतु अपने पुत्र को किसी भी रूप में जीवित देखने के लिए मुनियों को उसके शव मंथन की आज्ञा दे देती है। अत्रि मुनि सुनीथा से कहता है हमारे मंत्र तो जनता की आवाज थे तब सुनीथा स्पष्ट बोलती है- ''खोखली है वह आवाज शासक के तेज के बिना। ....एक अंधा धक्का देकर आप लोगों ने उस

तेजपुंज को बिखेरा। ....मैं ने फिर से बीन-बीनकर उसे एकत्र किया है। ....यही तेजपुंज ब्रह्मावर्त को बचाएगा। ....इसी वेदी के अंगारे, इसी अग्निहोत्र का तेजस्वी धुआँ।"[53]

नाटककार ने सुनीथा को समाज सेविका के रूप में भी संकेत किया है। पृथु के यह कहने पर कि "माता सुनीथा। युद्ध के घायलों की सुश्रुषा भी होती है।"[54] वह उत्तर देती है- "मैं करूँगी। मैं इसी दिन की प्रतीक्षा में थी।"[55] इसके पश्चात् दूसरे अंक के मध्य में गर्ग के संवाद से ज्ञात होता है कि राजमाता सुनीथा परलोक सिधार चुकी हैं। सुनीथा के चित्रण में नाटककार अधिक रंग नहीं भरे हैं। फिर भी यह चरित्र अत्यंत प्रभावी दिखाई देता है। इस पात्र के चरित्र की रेखाएँ अत्यंत स्वाभाविक रूप से किया है। वह स्पष्ट पुष्ट और भास्वर है। अपनी शक्ति से वह मुनियों को भी ललकार देती है।

*2.4 दासी -*

'पहला राजा' नाटक में सबसे अकिंचन दासी है, किंतु नाटक में वह भी अपनी निश्चित भूमिका निभाती है। वह राजमाता सुनीथा के साथ बात करता हुआ दिखाई देता है। सुनीथा बोलने से वह वेन के शव के गरदन में से कुशा की रस्सी निकालती है। वह कर्तव्यपरायण है। वह हमेशा स्वामिनी का साथ देती है। इसलिए वह मुनिगण के साथ घमंड़ से बातें करती दिखाई देती है। सुनीथा को वह बोलती है- "मुनियों ने कुशा की इस रस्सी में हत्यारे मंत्र फूँके थे देवी।"[56]

दूसरे अंक में पृथु और अर्चना के साथ भी दासी आती है। वह झिझके हुए पृथु को बोला रोषाकुल जनता उपद्रव करने के लिए आ रहे हैं- "क्षमा करें महारानी। जनता ने सूत-मागध को गीत गाने से रोक दिया। वे महाराज के यश के गीत, उनके पराक्रमगान नहीं सुनना चाहते . वे बहुत बेचैन हैं, तरह-तरह के नारे लगा रहे हैं, उपद्रव करने पर तुले हैं।"[57] वह बोल रही है अकाल और भूख के कारण जनता प्रकोपित हो गई है। दासी अर्चना को बोल रही है- "आसार ! ....वे कहते हैं कि पेड़ के कोटर के भीतर सुलगती आग जैसे बाहर फौरन जाहिर नहीं होती, वैसी हमारी भूख की ज्वाला है। पर उनके नारे, उनकी आँखों का रोष, उस भीतरी ज्वाला का धुआँ है !"[58] फिर बोलती है- "उनकी यही तो शिकायत है कि महाराज पृथु ने जो कुछ किया है मुनियों के

आश्रमों और उनके यज्ञों के लिए।"[59] भीड़ में घुस गए पृथु की हालत अर्चना को वह बताती है- "उन्होने आजगव धनुष अलग उठाकर रख दिया। खड्ग को छुआ तक नहीं! ....निहत्थे भीड़ में घुस गए और उस तरफ बढ़ने लगे, जहाँ सूत और मागध पर भीड़ बेतहाशा प्रहार कर रही थी।"[60] इस प्रकार दासी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके साथ ही ऐसे पात्र भी माथुर के नाटकों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो नाटक में चर्चित मात्र हैं, पर मंच पर उपस्थित नहीं होते। इनमें कोणार्क की सारिका उल्लेखनीय है। विशु की पूर्व-प्रेयसी और धर्मपद की दिवंगत माता के रूप में उसका जो बिंब उभारा गया है, वह सारी नाटकीय संवेदना का आधार बनता है। नाटककार ने बड़े कौशल के साथ सूर्य और कुंती के प्रेम प्रसंग के द्वारा उनके समर्पित प्रेम और विशु के उद्दाम यौवन की भूल को बड़े सुंदर ढंग से उभारा है। इसके साथ ही उसके रूप और प्रभाव की गहरी रेखाएँ भी अंकित की हैं- "वह वन की कली थी। जंगली शबर जाति की कन्या। चट्टान को फोड़कर बहनेवाली निर्द्वंद्व निष्कलुष जलधारा। वह मद-भरे पावस सी उन्मत्त थी, पुष्पावृत कामिनी-तरू-सी संपन्न।"[61] यही सारिका विशु की प्रेरणा रही है और धर्मपद के लिए शक्ति की प्रतीक : "उसने मुझे शक्ति दी जिसके बल पर नन्हा बीज धरती को फोड़कर नए जीवन का प्रतीक बनता है।"[62] धर्मपद और विशु दोनों के लिए वह किरण थी। धर्मपद- "आर्य, मेरी आँखों के सामने जो परदा पड़ा है उसे न उठाइए। उस पर मेरी माँ की मधुर, गंभीर, दर्द-भरी मूर्ति दीख रही है। किरणों के बीच माँ भली लगती है।" विशु - "मंदिरों का निर्माण करते-करते कभी-कभी सहसा मेरी आँखों के आगे अंधेरा छा जाता था। ...तभी तुम्हारी माँ की मनोरम और तेजस्वी मूर्ति की झलक मिलती और उन किरणों से मुझे प्रकाश मिलता।"[63] विशु की कला और धर्मपद के शौर्य में उसी का बिंब रूपायित होता है। संभवतः जीवित पात्र के रूप में न होने पर भी उसे नाटक का सबसे सशक्त और जीवंत पात्र कहा जा सकता है।

शारदीया में गोविंदराव काले भी एक ऐसे पात्र हैं। उसे नाटक का सबसे सशक्त और जीवंत पात्र कहा जा सकता है। उसकी ही प्रेरणा नरसिंहराव में हिंदू-मुस्लिम एकता की भावना में प्रतिफलित हुई है। वह नाटक में पात्र की अपेक्षा विचार के रूप में विघमान दिखाई देता

है। उसकी चर्चा विरोध में की गई है, "सच कहता हूँ गोविंदराव किसी सपने की दुनिया में रहते हैं। आँखें बंद करके सोचते हैं- हिंदू और मुसलमान मिल जाँय, निजाम और मराठे एक हो जाँय।"[64] किंतु नाटक का उदात्त कथ्य उसी की विचारधारा पर आधारित है।

'पहला राजा' में भूचंडिका इसी प्रकार नेपथ्य की एक प्रबल शक्ति के रूप में उल्लिखित है, जिसके विरूद्ध सारा विरोध खड़ा किया जाता है। मुनि धरती की अनुर्वरता का एकमात्र कारण उसे ही घोषित करते हैं- "प्रजा की पीड़ा, हमारी चिंता, आप का क्रोध तीनों का एक ही लक्ष्य है राजन, एक ही कारण- भूचंडिका। धरती की दानवी।"[65] वह नंगी नारी मूर्ति भी है, देवी भी, चेतन नारी-पात्र भी और जड़ धरती भी। सारा संघर्ष उस पर केंद्रित होता है, किंतु मंच पर वह कहीं नहीं दिखाई देती है। लेकिन उर्वी उसका प्रतीकत्व धारण कर लेती है।

*निष्कर्ष -*

माथुर के नाटकों के गौण पात्र गौण होते हुए भी जीवंत लगते हैं। पूरे पात्र एक विशिष्ट संदर्भ और अंतसंबंध में जीते हैं। नाटक उनसे जो अपेक्षा रखता है, उसका वे पूरा निर्वाह करते हैं। जगदीशचंद्र माथुर के नाटकीय पात्र सक्रिय अस्तित्व का बोध कराते हैं।

माथुर जी के तीनों नाटकों में कुल मिलाकर 17 गौण पुरुष पात्र और चार गौण नारी पात्र हैं। गौण पात्रों के रूप में 'कोणार्क' में राजीव, शैवालिक, महेंद्रवर्मन और सूत्रधार आते हैं। 'शारदीया' में दौलतराव सिंधिया, परशुराम भाऊ, जिन्सेवाले, बाबा फडके, गढ़पति, सैनिक, दरबान, पत्र लेखक आदि आते हैं। 'पहला राजा' नाटक में शुक्राचार्य, अत्रि और गर्ग आदि मुनिगण और सूत और मागध स्तुतिपाठक के रूप में आते हैं। 'शारदीया' नाटक में रहीमन नर्तकी और गायिका है। प्रस्तुत पात्र को नाटककार ने अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए रखी है। सरनाबाई बायजाबाई की परिचारिका है। वह हमेशा बायजाबाई का साथ देती है। 'पहला राजा' नाटक में सुनीथा राजमाता है। वह अत्यंत करुण, कोमल, ममत्वपूर्ण माँ के रूप में चित्रित हुई है। नाटककार ने सुनीथा को समाज सेविका के रूप में भी चित्रित किया है। 'पहला राजा' नाटक में दासी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह हमेशा स्वामिनी का साथ देती है।

# संदर्भ सूची

1. जगदीशचंद्र माथुर - कोणार्क, पृ. 27
2. वही, पृ. 27
3. वही, पृ. 56
4. वही, पृ. 58
5. वही, पृ. 47
6. जगदीशचंद्र माथुर - शारदीया, पृ. 42
7. वही, पृ. 46
8. वही, पृ. 46
9. वही, पृ. 50
10. वही, पृ. 56
11. वही, पृ. 91
12. वही, पृ. 89
13. वही, पृ. 95
14. वही, पृ. 40
15. वही, पृ. 40
16. वही, पृ. 45
17. वही, पृ. 61
18. वही, पृ. 39
19. वही, पृ. 84
20. वही, पृ. 84
21. वही, पृ. 95
22. वही, पृ. 35

23. वही, पृ. 38
24. वही, पृ. 40
25. वही, पृ. 42
26. वही, पृ. 43
27. वही, पृ. 100
28. वही, पृ. 107
29. वही, पृ. 106
30. विष्णुकांत शास्त्री - आधुनिक जीवन का तीन स्तरों पर साक्षात्कार, पृ. 22
31. जगदीशचंद्र माथुर - पहला राजा, पृ. 18
32. वही, पृ. 24
33. वही, पृ. 44, 45
34. वही, पृ. 48
35. वही, पृ. 71
36. दिनमन - 7 सितंबर, 1969, पृ. 43
37. जगदीशचंद्र माथुर - पहला राजा, पृ. 22
38. वही, पृ. 18
39. वही, पृ. 28
40. वही, पृ. 45
41. वही, पृ. 45
42. जगदीशचंद्र माथुर - शारदीया, पृ. 67
43. वही, पृ. 73
44. वही, पृ. 29
45. वही, पृ. 30
46. वही, पृ. 69

47. वही, पृ. 69, 70

48. वही, पृ. 72

49. वही, पृ. 72

50. जगदीशचंद्र माथुर - पहला राजा, पृ. 13

51. वही, पृ. 14

52. वही, पृ. 32

53. वही, पृ. 33

54. वही, पृ. 32

55. वही, पृ. 48

56. वही, पृ. 14

57. वही, पृ. 61

58. वही, पृ. 62

59. वही, पृ. 62

60. वही, पृ. 64

61. जगदीशचंद्र माथुर - कोणार्क, पृ. 33

62. वही, पृ. 52

63. वही, पृ. 53, 54

64. जगदीशचंद्र माथुर - शादीया, पृ. 40

65. वही, पृ. 48